Paper VII BY- Dr. Shyam Bihari Choudhary SEMESTER-2
Date 05.05.20

Expt. No. TOPIC- Hindi Pedagogy (हिन्दी शिक्षण विधि) Page No. 1

भाषा की प्रकृति एवं कार्य

"भाषा मानव जीवन की सार्थकता को व्यक्त करती है। यह मानव जीवन के विकास की परिचायक है। भाषा न तो एक दिन में बनी है और न बनाई जा सकती है। यह इतिहास की प्रक्रिया से गुजर चुकने के बाद मनुष्य को उपलब्ध हुई है"

सांकेतिक भाषा को छोड़कर भाषा के दो स्वरुप होते हैं।
(1) मौखिक व (2) लिखित।
मौखिक भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक होती है, जबकि लिखित भाषा में ध्वनि संकेतों को प्रतीक रुप में लिखकर व्यक्त किया जाता है।

डा॰ भोलानाथ तिवारी ने कहा है—
"भाषा मानव उच्चारणावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार विनिमय करते हैं, लेखक, कवि या वक्ता के रुप में अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते हैं तथा अपने वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व, विशिष्टता तथा अस्मिता (Identity) के सम्बन्ध में जाने अनजाने जानकारी देते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "भाषा साहित्य का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरुप है तथा विश्व की हृदयतन्त्री का झंकार है जिसके स्वर से यह अभिव्यक्ति पाती है।

भाषा की विशेषताऐं

(1) भाषा एक व्यवस्था है। यह अनुकरण द्वारा सीखी जाती है।
2) यह अर्जित सम्पत्ति है।
3) यह परिवर्तनशील है।
(4) भाषा सभ्यता के साथ विकास पाती है
(5) भाषा प्रतीकात्मक है।
(6) भाषा समाज में विचार विनिमय का साधन है
(7) इसका प्रारम्भ मौखिक है। लिखित रुप सभ्यता और संस्कृति की देन है।

Teacher's Signature Dr. Shyam Bihari Choudhary
Asst. Prof. (MMHAPU)

Scanned with CamScanner